



*Journal of Advances and
Scholarly Researches in
Allied Education*

*Vol. XI, Issue No. XXI,
Apr-2016, ISSN 2230-7540*

REVIEW ARTICLE

सूर रचित सूरसागर के भ्रमरगीत की काव्य भाषा का शैली
वैज्ञानिक सूक्ष्म वर्णात्मक अध्ययन

AN
INTERNATIONALLY
INDEXED PEER
REVIEWED &
REFEREED JOURNAL

सूर रचित सूरसागर के भ्रमरगीत की काव्य भाषा का शैली वैज्ञानिक सूक्ष्म वर्णात्मक अध्ययन

Elizabethi

Lecturer, Mizoram Hindi Training College, Durtlang, Aizawl, Mizoram-796007

-----X-----

शैलीविज्ञान काव्य अथवा साहित्यिक भाषा का वैज्ञानिक अथवा व्यवस्थित अध्ययन है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि साहित्य भाषा की एक विशिष्ट शैली है, अर्थात् “विशिष्ट शैली” के कारण ही साहित्य, साहित्य है। शैली की साहित्यगत अपरिसार्थता स्वीकार करने के बाद यह कहना अतिशयोक्ति नहीं है कि शैली-विज्ञान एक स्वतः पूर्ण ज्ञान विधा है। औचित्य पूर्ण दृष्टि से यह कहना उपयुक्त प्रतीत होता है शैली विज्ञान का साहित्य के अध्ययन में महत्वपूर्ण योगदान संभव है, लेकिन यह कहना अतिव्यक्ति मूलक होगा कि शैली विज्ञान एक नियंत्रक ज्ञान विधा है, अर्थात् साहित्य के अध्ययन में इसी ज्ञान-विधा का पूर्ण वर्चस्व रहता है। यह स्वीकारने से किसी प्रकार की आपत्ति नहीं होनी चाहिये कि शैली वैज्ञानिक प्रविधि के अभाव में साहित्य समीक्षा संभव नहीं है, पर यह कहना भी अतिशयोक्तिपूर्ण होगा कि शैली विज्ञान ही “साहित्य समीक्षा” का दूसरा नाम है। इस सम्बन्ध में डॉ० रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव का यह दृष्टिकोण है कि “शैली विज्ञान आलोचना की नई भूमिका” है।

भारतीय काव्यशास्त्र में दोष, गुण, अलंकार, शब्द-शक्ति का विवेचन किया गया है। भारतीय लेखकों ने शैली-विज्ञान से सम्बन्धित इन सभी अवधारणाओं का सूक्ष्मता के साथ विवेचन किया है। “ध्वन्धालोक”, “व्यक्तिविवेक” आदि के आधार पर भारतीय शैली विज्ञान का विस्तृत आधार तैयार किया जा सकता है। भारतीय विचारकों ने भाषा के शैक्षिक पक्ष की अवहेलना नहीं की। उनका दृष्टिकोण मात्र व्यक्तिपूरक नहीं रहा, वरन् उन्होंने वस्तुपूरक दृष्टिकोण को भी अपनाया।

साहित्य सम्बन्धी भारतीय विवेचन में यह तथ्य पुष्पलता के साथ निरूपित हुआ है कि साहित्य भी भाषा का एक रूप है। साहित्य मूल रूप से भाषा पर आधारित है। शब्द से ही काव्य निरूपित होता है। भामह, दंडी, मम्मट, पंडितराज जगन्नाथ आदि आचार्यों ने इस तथ्य को निरावल रूप से स्वीकार किया है—

शब्दार्थो सहितौ काव्यम् — भामह

शरीरं तावादिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली — दंडी

तददोषो शब्दार्थो सगुणावर्णलन्ती पुनः क्वापि: —ममहाचार्य

रमगीण्यातिपादकः शब्दः काव्यम् — पंडितराज जगन्नाथ

यहां यह उल्लेखनीय है कि शब्द का प्रयोग सभी आचार्यों ने विस्तृत एवं व्यापक अर्थ में किया है। वस्तुतः शब्द यहां समग्र भाषा के लिये व्यवहृत है। अन्य आचार्यों ने अपने-अपने सिद्धान्तों के निरूपण के लिये विशिष्ट शब्दों को प्रयोग किया है। वक्रोक्ति-सामान्य से भिन्न प्रयोग किया है। कुन्तक की दृष्टि में वक्रोक्ति के द्वारा ही काव्य की सृष्टि संभव है। “वक्रोक्ति काव्य जीवितम्” से उनका यही मन्तव्य है।

इसी प्रकार वान “रीति”-“विशिष्ट पदरचना” को काव्य की आत्मा मानते हैं —

“रीतिरात्मा काव्यस्य”-“विशिष्टाः पदरचना रीतिः”।

वस्तुतः विशिष्ट पदरचना से उनका अभिप्राय वही है कि काव्य भाषा का ही एक विशिष्ट रूप है।

विश्वनाथ की काव्यविषयक उक्ति — “वाक्यं रसात्मकं काव्यम्” — “रसात्मक वाक्य ही काव्य — साहित्य होता है, भी उपर्युक्त मन्तव्य — “साहित्य भाषा का ही एक रूप है, की पुष्टि करता है।

काव्य-भाषा संरचनात्मक दृष्टि से सामान्य भाषा से अलग होती है। इस मान्यता के आधार पर रूसी विद्वान विनोकर ऐसा मानते हैं कि काव्यभाषा विज्ञान की परिधि से बाहर निकल जाती है तथा उससे सम्बद्ध समस्याओं का समाधान भाषाविज्ञान के पास नहीं होता। कोझिनोव भी ऐसा मानते हैं कि “कविता”, भाषा से भिन्न संघटना की मांग करती है।

वस्तुतः विनोकर और कोझिनोव प्रभृति रूसी विज्ञानों की काव्यभाषा के अध्ययन में भाषा विज्ञान की अक्षमता सम्बन्धी धारणाओं में कोई तथ्य नहीं है, क्योंकि भाषा विज्ञान सब प्रकार की भाषाओं के अध्ययन के लिये प्रतिश्रुत है।

उसी प्रकार साहित्य समीक्षा के लिये भाषा विज्ञान आवश्यक है। एक अच्छा समीक्षक अनिवार्यतः एक अच्छा भाषाविद् भी होता है।

वेलेक ने अपने उपर्युक्त लेख में एक स्थान पर कहा है कि—

I am one of those students of literature who recognize and emphasize the enormous contribution of

linguistics to literary scholarship. Especially in the analysis of matter and especially again in the analysis of the phonemic principle, the contribution of linguistics has been invaluable.

यह स्वीकार्य है कि पहले भाषा वैज्ञानिकों ने कविता के ध्वनि पक्ष एवं छन्दों का ही विश्लेषण किया और उससे सम्बन्धित अध्ययन को वैज्ञानिकता प्रदान की, पर भाषा – वैज्ञानिक अध्ययन की यहां दायित्व नहीं है, वरन् वह ध्वनियों के अध्ययन के माध्यम से कविता के अन्तर्धान की ओर भी इंगित करता है, तथा अर्थ के स्तर पर गौण अर्थ का भी पता लगाता है।

कविता की आलोचना का मुख्य धर्म मूल्यों का अन्वेषण है, इसी प्रकार के विचार डोनाल्ड सी फ्रैमैन के हैं –

Recent work in linguistics and the increased interest in the linguistic approaches to literary studies have led to the emergence of modern linguistic theory as a contributory discipline to the literary criticism. Linguistics is as much entitled to place in the baggage of the literary critic as history, biography, bibliography or psychology – all disciplines which contribute new fact new ways of looking at facts and new kinds of theoretical commitments to the crafts of studying, explaining and evaluating literatures are viewed in this way – as a contributing but not a controlling body of theory – linguistics gives literary criticism a theoretical underpinning as necessary to that undertakings as mathematics to physics. A good critic is perforce a good linguist.

भाषा विज्ञान में जो कार्य इधर हुआ है और जो हो रहा है तथा उसके परिणामस्वरूप साहित्य समीक्षा विषयक जिसका भाषा वैज्ञानिक दृष्टि का उल्लेख हो रहा है, उससे साहित्य समीक्षा के लिये अवदानमूलक एक नई ज्ञानविधा का उदय हो रहा है।

संदर्भ ग्रंथसूची

- ❖ शैली विज्ञान आलोचना की नई भूमिका, रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, पृ० 72, 1967
- ❖ Style in language – Ed. Schools – Retrospect's and Prospects from the viewpoint of literary criticism, - Renewellek, p. 410. 1972
- ❖ शैली विज्ञान – आलोचना की नई भूमिका पर आधारित , रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, पृ० 72, 1968
- ❖ "Literary analysis begins where linguistic analysis stops" Retrospect and prospects from the viewpoint of literary criticism". Renewellek, p. 417, 1965
- ❖ Linguistic and literary style – "Linguistic approaches to literature Donale C. Freeman, 1970, p. 3.